ग़ज़ल : कभी ख्वाहिशों ने, फंसाया ज़िन्दगी को

-शांति स्वरूप मिश्र
सरकारी सेवा के उपरान्त सेवानिवृत्त, तत्पश्चात पूर्णरूपेण हिंदी साहित्य के लिए समर्पित, कविता, ग़ज़ल, शायरी एवं कहानियां आदि का सृजन, ग़ज़ल संग्रह : जुगनू टिम टिम, अंधेरों के दरमियाँ, कहानी संग्रह : आत्मबोध
https://sahityacinemasetu.com/gazal-kabhi-khowaish-ne-fasaya-zindagi-ko

---

कभी ख्वाहिशों ने, फंसाया ज़िन्दगी को !
तो कभी ज़रूरतों ने, रुलाया ज़िंदगी को !
कभी राह में गैरों ने बिछाए कांटे दोस्तो,
तो कभी अपनों ने, छकाया ज़िन्दगी को !

कभी ख्वाबों में खुश हो लिए हम यूं ही,
तो कभी हक़ीक़तों ने, सताया ज़िंदगी को !
कभी ख़ुशी के रंगों से पुलकित हुआ दिल,
तो कभी मुश्किलों ने, हराया ज़िन्दगी को !

कभी चढ़ते गए मंज़िल की सीढियाँ “मिश्र”,
तो कभी दुश्मनों ने, गिराया ज़िन्दगी को !